हिमालयन वन अनुसंधान संस्थान, पंथाघाटी, शिमला

हितधारकों हेतु कार्यशाला का आयोजन

(11.08.2017)

हर वर्ष की भान्ति इस वर्ष भी हिमालयन वन अनुसंधान संस्थान, पंथाघाटी, शिमला द्वारा दिनांक 11.08.2017 को संस्थान के हितधारकों (Stakeholders) की एक दिवसीय कार्यशाला का आयोजन डॉ० वी०पी० तिवारी, निदेशक, हिमालयन वन अनुसंधान संस्थान की अध्यक्षता में किया गया ।

कार्यशाला में हिमाचल प्रदेश वन विभाग के वन अधिकारी डा० विजयलक्ष्मी तिवारी, अतिरिक्त प्रधान मुख्य-अरण्यपाल, श्री एच०एस० डोगरा, अतिरिक्त प्रधान मुख्य-अरण्यपाल (अनुसंधान एवं प्रशिक्षण), करनोडी, सुदंरनगर, श्री के० एस० ठाकुर, मुख्य-अरण्यपाल (एम एण्ड ई), डा० सुशील कापटा, मुख्य-अरण्यपाल (वाईल्ड लाईफ) एवं श्री डी०एस० ठाकुर, वनमण्डल अधिकरी रोहडू के अतिरिक्त श्री ओम प्रकाश चंदेल, एसीएफ शिमला व श्री अनु ठाकुर, आरएफओ कोटी भी उपस्थित रहे । इसके अतिरिक्त सेवानिवृत प्राध्यापक प्रो० टी०एन० लखनपाल, डा० ए०के० रणदेव, प्राध्यापक, यू०एच०एफ० नोणी, सोलन व डॉ० मोहर सिंह, वैज्ञानिक प्रभारी, एनबीपीजीआर, शिमला ने भी इस एक दिवसीय कार्यशाला में अपनी-2 उपस्थित दी । वानिकी क्षेत्र में कार्य कर रहे गैर सरकारी संगठनों से डॉ० मनिन्दर जीत कौर, डॉ० एस०के० जोशी, डॉ० आर०एस० मिन्हास, पंचायत प्रतिनिधियों में श्री ओम प्रकाश ठाकुर, बल्देव वर्मा तथा श्री मेला राम शर्मा, जो कि एक विकासशील किसान हैं, भी इस कार्यशाला में उपस्थित रहे ।

कार्याशाला के आरम्भ में डॉ० के०एस० कपूर समूह समन्वयक (अनुसंधान) ने सभागार में उपस्थित सभी गणमान्य हितधारकों, अधिकारियों व कर्मचारियों का अभिनंदन किया व वन विभाग से आए वरिष्ठ अधिकारी श्री एच०एस० डोगरा, अतिरिक्त प्रधान मुख्य-अरण्यपाल (अनुसंधान व प्रशिक्षण) को संबोधन हेतु आमंत्रित किया । अपने सम्बोधन में श्री डोगरा जी ने वन विभाग द्वारा चलाए जा रहे विभिन्न कार्यक्रमों, जड़ी-बूटियों की नर्सरी, नाग-छतरी, जिसका कि वनों से गलत तरीकों से दोहन कर निर्यात किया जा रहा है, पर विभाग की चिंता व्यक्त की । उन्होनें विभिन्न स्पीसिज के टॉल प्लांटस के ऊपर शोध व इस संस्थान के साथ ताल-मेल रखने के अलावा अनुसंधान से सम्बन्धित अन्य कई मुद्दों पर भी प्रकाश डाला व अनुरोध किया कि यह संस्थान विभिन्न मूददों पर शोध कार्य कर अपने विष्कर्ष शोध परिणाम विभाग के साथ समय-2 पर सांझा करता रहे ।

तत्पश्चात् डॉ० कपूर ने डॉ० वी०पी० तिवारी, निदेशक, हिमालयन वन अनुसंधान संस्थान से इस कार्यशाला में उपस्थित सभी गणमान्य हितधारकों, अधिकारियों व कर्मचारियों के अभिनंदन हेतू आग्रह किया । डॉ० तिवारी ने सर्वप्रथम कार्याशाला में उपस्थित सभी गणमान्य हितधारकों का व्यक्तिगत रूप से अभिनंदन किया व कार्यशाला में पधारकर संस्थान की गरिमा बढ़ाने के लिए

सभी महानुभवों का सहर्ष धन्यवाद व्यक्त किया । इसके पश्चात् उन्होंने अपने सम्बोधन में सभी हितधारकों को बताया कि इस कार्यशाला का मुख्य उद्देश्य हिमाचल प्रदेश तथा जम्मू-काश्मीर राज्यों की वानिकी एवं वानिकी अनुसंधान से सम्बन्धित प्राथमिकताओं को हितधारकों के साथ सांझा कर उनके सुझावों के अनुसार अन्तिम रूप देकर समस्याओं का समाधान करना है । यही कारण है कि इस कार्यक्रम में हितधारकों की हमेशा अहम भूमिका रहती है । कार्यशाला में उपस्थित हितधारकों को सम्बोधित करते हुए उन्होंने यह भी बताया कि यह संस्थान ऐसी कार्यशाला के पश्चात हितधारकों द्वारा सुझाई गई समस्याओं/ आवश्यकताओं के आधार पर भविष्य में प्राथमिकताओं पर आधारित अनुसंधान परियोजनाएं तैयार कर उन्हें कार्यान्वित करता है, जिससे वानिकी क्षेत्र के हितधारकों को लाभ मिलता है । उन्होंने कार्यशाला में उपस्थित सभी प्रतिभागियों को इस बात से भी अवगत करवाया कि ऐसी ही कार्यशाला के दौरान, जो पिछली बार संस्थान द्वारा आयोजित की गई थी, से प्राप्त सुझावों के आधार पर ही परिषद् की अनुसंधान नीति समिति (Research Policy Committee) ने सेलिक्स, बान ओक व शीत मरूस्थलीय औषधीय पौधों पर संस्थान द्वारा तैयार की गई परियोजनाएं पारित की और इस वर्ष से पहली दो परियोजनाओं पर शोध कार्य आरम्भ हो चुका है । आज संस्थान परिषद् द्वारा वित्तपोषित 09 परियोजनाएं व बाह्य अनुदान प्राप्त 16 अनुसंधान परियोजनाएं कार्यान्वित कर रहा है । उन्होंने इस बात पर भी जोर दिया कि संस्थान के पास संसाधन सीमित हैं जबकि समस्याएं ज्यादा हैं ओर इन सब मुद्दों को ध्यान में रखकर ही शोध कार्य किया जाना है । अपने सम्बोधन में उन्होंने सह भी कहा कि संस्थान इस कार्यशाला के सदस्यों के सुझावों के साथ-2 अपने भी दो महत्वपूर्ण मुद्दों "**Impact of Invasive Alien Species on the Forest Health and Development of eco-friendly alternatives for production of quality nursery stock from various seed sources**" पर अपनी राय व्यक्त करेगा । इसके अतिरिक्त निदेशक महोदय ने **Cold Deserts, Biodiversity Conservation and Degradation** आदि विषयों को भी विस्तार से रखा व जोर दिया कि वन पर्यावरण सुरक्षा एवं संरक्षण हेतू योगदान पर हमें बल देना है ।

निदेशक महोदय के सम्बोधन के उपरान्त, संस्थान के समूह समन्वयक (अनुसंधान), डॉ० के०एस० कपूर ने संस्थान में चल रही अनुसंधान गतिविधियों से उपस्थित हितधारकों को प्रस्तुति के माध्यम से अवगत करवाया । उन्होंने कहा कि इस कार्यशाला के आयोजन का मुख्य उद्देश्य यह रहता है कि हितधारक वानिकी अनुसंधान से सम्बन्धित उनकी आवश्यकताएं संस्थान को बताएं ताकि संस्थान के वैज्ञानिक तदानुसार अनुसंधान कर सके । डॉ० कपूर ने बताया कि संस्थान द्वारा प्रतिभागियों के मार्गदर्शन व सुझावों के अनुरूप अनुसंधान परियोजनाएं बनाई जायेगी ओर आशा व्यक्त की कि इन परियोजनाओं के परिणाम निःसंदेह हितधारकों के हित में काफी कारगर साबित होंगे ।

उपस्थित सभी हितधारकों ने संस्थान द्वारा चलाई जा रही है अनुसंधान परियोजनओं की प्रगति पर संतोष व्यक्त किया । नई प्रस्तावित परियोजनाओं, जो कि प्रस्तुति द्वारा प्रतिभागियों से सांझी की गई थी, पर सुझाव दिया गया कि संस्थान को दीर्घ अवधीय शोध क्षेत्रों (**Long Term**

Research Sites) को स्थापित करते समय, सभी वन प्रकारों को सम्मिलित करना चाहिए । गैर सरकारी संस्थाओं द्वारा कृषि वानिकी को यथार्थ रूप से कृषकों तक पहुंचाने पर जोर दिया गया । सभा में उपस्थित ग्राम पंचायत प्रधान व प्रधान, महिला-मण्डल ने भी संस्थान द्वारा विकसित की गई तकनीकों को आमजन तक पहुंचाने हेतु आग्रह किया ताकि उन्हें इस उपयोगी अनुसंधान का लाभ प्राप्त हो सके ।

वन विभाग से आए अधिकारियों ने इस संस्थान के कार्यों की प्रशंसा की तथा हिमाचल प्रदेश वन विभाग की ओर संस्थान को पूर्ण सहयोग का आश्वासन दिया । उन्होंने कहा कि आवश्यकता इस बात की है कि अनुसंधान के परिणामों को हितधारकों तक पहुंचाया जाए ताकि आम जनमानस को इनका लाभ मिल सके । कार्यशाला के दौरान उपस्थित हर क्षेत्र के सभी बुद्धिजीवियों ने वानिकी क्षेत्र से जुड़े मुद्दों पर अपने-2 अनुभवों से संस्थान को अवगत कराया ।

इस कार्यशाला के दौरान डॉ० रणजीत सिंह, वैज्ञानिक-जी० व डॉ० पवन कुमार, वैज्ञानिक-डी० द्वारा दो नई परियोजनाओं को प्रस्तुत किया गया जिन पर भी काफी विचार-विमर्श हुआ तथा सदस्यों द्वारा सुझाव दिए गए । तत्पश्चात इन परियोजनाओं में कुछ बदलाव के उपरान्त modify करने हेतू कहा गया ।

कार्यशाला के अन्त में श्री प्रदीप भारद्वाज, उप अरण्यपाल, हिमालयन वन अनुसंधान संस्थान, शिमला ने कार्यशाला में उपस्थित सभी हितधारकों का, उनके द्वारा दिए गए सुझावों तथा महत्वपूर्ण योगदान देने हेतु धन्यवाद प्रस्ताव पारित किया ।

****

SOME CLIPPINGS OF THE STAKEHOLDERS WORKSHOP

Dr R.S. Minhas
Chairman, HIMOARD

Sh. M.R. Sharma
Progressive Farmer

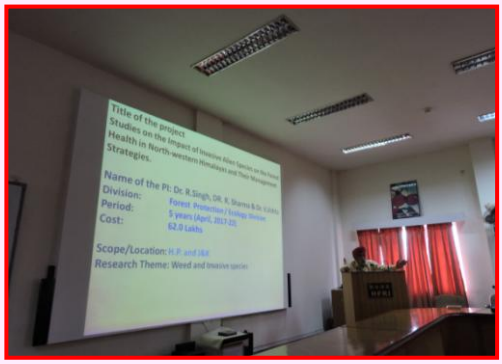

Sh. R.S. Thakur
Dr. T.R. Lakhanpal

Title of the project
Studies on the Impact of Invasive Alien Species on the Forest
Health in North-western Himalayas and Their Management
Strategies.
Name of the PI: Dr. R.Singh, DR. R. Sharma
Division:
Period:
Cost:
62.0 Lakhs
Scope/Location: H.P. and J&K
Research Theme: Weed and Invasive species

HFRI